* अंतर्राष्ट्रीय घटनाओं का प्रभाव:

विदेशों में भी अनेक आन्दोलनों एवं घटनाओं ने राष्ट्रीय चेतना जागृत करने में सहायता की। 1776 में संयुक्त राज्य अमेरिका द्वारा स्वतंत्रता की घोषणा, 1789 की फ्रांसीसी क्रांति, 1870 में इटली और जर्मनी का एकीकरण, 1904 में जापान द्वारा रूस की हार आदि ने भारतीयों को प्रेरित किया। उन्हें विश्वास हो गया कि आत्मनिर्णय के अधिकार के लिए शक्तिशाली ब्रिटिश सत्ता के खिलाफ लड़ना संभव होगा। इस प्रकार, विश्व की घटनाओं ने भारतीयों को प्रेरित किया और राष्ट्रवाद के उदय को बढ़ावा दिया।

* सामाजिक और धार्मिक सुधार आंदोलन:

ब्रिटिश शासन के दौरान भारत में हुए विभिन्न सामाजिक और धार्मिक सुधार आंदोलन लोगों की बढ़ती राष्ट्रीय चेतना की अभिव्यक्ति के अलावा और कुछ नहीं थे। उदार पश्चिमी संस्कृति को आत्मसात करने वाले नए शिक्षित वर्ग ने सामाजिक संस्थाओं और धार्मिक दृष्टिकोणों में सुधार की आवश्यकता को पहचाना क्योंकि इन्हें राष्ट्रीय प्रगति में बाधा माना जाता था। आर्य समाज, ब्रह्म समाज, राम कृष्ण जैसे कई संगठन मिशन, थियोसोफिकल सोसायटी आदि ने भारत में सुधार और पुनर्जागरण के आंदोलन लाने में मदद की। इन आंदोलनों का उद्देश्य सामाजिक और धार्मिक क्षेत्रों से विशेषाधिकार को समाप्त करना, देश की सामाजिक और धार्मिक संस्थाओं का लोकतंत्रीकरण करना और व्यक्तिगत स्वतंत्रता और सामाजिक समानता को बढ़ावा देना था। उन्होंने जाति या लिंग की परवाह किए बिना सभी व्यक्तियों के लिए समान अधिकार स्थापित करने की मांग की। इस प्रकार राष्ट्रीय जनवादी जागृति को राष्ट्रीय जीवन के सभी क्षेत्रों में अभिव्यक्ति मिली। राजनीति में इसने प्रशासनिक सुधार, स्वशासन, होम रूल और अंततः स्वतंत्रता के आंदोलन को जन्म दिया।

* अंग्रेजों की दमनकारी नीतियाँ एवं जातीय अहंकार:

भारतीयों के प्रति अंग्रेजों के नस्लीय अहंकार और अशिष्ट व्यवहार ने उन्हें अपनी स्थिति के प्रति सचेत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। ब्रिटिश सरकार शिक्षित भारतीयों को उच्च प्रशासनिक पदों पर सेवा करने के किसी भी अवसर का लाभ उठाने की अनुमति नहीं देती थी। भारतीय सिविल सेवा परीक्षा के लिए आयु सीमा इक्कीस से घटाकर उन्नीस वर्ष कर दी गई और परीक्षा ब्रिटेन में आयोजित की गई। इस परिवर्तन का उद्देश्य वास्तव में भारतीयों को सिविल सेवाओं में प्रवेश से वंचित करना था।

कई कानूनों के अधिनियमन ने भारतीयों में व्यापक असंतोष पैदा किया। वर्नाक्युलर प्रेस एक्ट ने भारतीय प्रेस की स्वतंत्रता पर अंकुश लगा दिया। शस्त्र अधिनियम ने भारतीयों को बिना लाइसेंस के हथियार रखने पर रोक लगा दी। विदेशी सूती कपड़े पर आयात कर समाप्त करने से भारतीय कपड़ा उद्योग को नुकसान हुआ। लॉर्ड रिपन के वायसराय काल में इल्बर्ट बिल के प्रावधान के अनुसार भारतीय न्यायाधीशों को भारतीयों के साथ-साथ यूरोपीय लोगों पर भी मुकदमा चलाने का अधिकार दिया गया था। लेकिन अंग्रेजों ने इस विधेयक का पुरजोर विरोध किया और अंततः वे इस विधेयक में अपने हित के अनुरूप संशोधन कराने में सफल रहे।

इस संशोधन ने ब्रिटिश सरकार की नस्लीय भेदभाव की नीति को उजागर कर दिया। लॉर्ड कर्जन ने न केवल भारतीयों के स्वाभिमान को ठेस पहुंचाने के लिए कुछ अप्रिय कदम उठाए, बल्कि बढ़ते भारतीय राष्ट्रवाद को दबाने के लिए उन्होंने बंगाल के विभाजन का आदेश भी दिया। विभाजन के आदेश से लोगों में व्यापक आक्रोश फैल गया। लोगों के आक्रोश को व्यक्त करने के लिए 'स्वदेशी' वस्तुओं का उपयोग और विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार प्रभावी तकनीकों के रूप में अपनाया गया। ब्रिटिश अधिकारियों की दमनकारी

नीतियों और नस्लीय अहंकार के खिलाफ भारतीयों की नाराजगी ने भारतीय राष्ट्रवाद को मजबूत करने में मदद की।

जागरूक मध्यम वर्ग का उदय:

इतिहासकार बिपन चंद्रा का मानना है कि भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन की नींव आधुनिक बुद्धिजीवियों के उभरते समूह द्वारा रखी गई थी। प्रारंभ में, इन समूहों ने औपनिवेशिक शासन के प्रति बहुत सकारात्मक दृष्टिकोण अपनाया। उन्हें जल्दी ही एहसास हो गया कि चूंकि भारत दुनिया के सबसे उन्नत देश के शासन में आ गया है, इसलिए इस तरह के संबंध से उन्हें अत्यधिक लाभ होगा। भारत को अपने विशाल प्राकृतिक और मानव संसाधनों के साथ एक प्रमुख औद्योगिक शक्ति में बदल दिया जाएगा। ब्रिटेन में औद्योगिक पूंजीवाद के विकास के दौर में ही भारत में अविकसितता देखी गई।